# DETAILS EXPLANATIONS

**Paper Code :** RPSCEE22 | : RPSCCE22 | RPSCME22

## [अनुभाग-अ]

1. **(क)** (i) हस्तांतरण (ii) धर्मार्थ
   **(ख)** (i) प्र + अर्थी (ii) मित + आहार
2. **(क)** (i) लक्ष्यभ्रष्ट (ii) कारागृह
   **(ख)** (i) कार्य से युक्त (ii) दुःख को हरने वाला
3. **(क)** (i) अवगुण (ii) सपूत
   **(ख)** (i) .सु (ii) उप
4. **(क)** (i) उड़ान (ii) लौकिक
   **(ख)** (i) कार (ii) दार
5. **(क)** (i) वस्त्र (ii) सोना
   **(ख)** (i) छोटा (ii) सदाचार
6. (i) कमल – बादल (ii) छाया – विद्यार्थी
7. (i) अदृश्य (ii) नभचर
   (iii) दैनिक (iv) अनुत्तीर्ण
8. (i) अध्ययन (ii) अनभिज्ञ
   (iii) अप्सरा (iv) कौतुक
9. (i) प्रातःकाल घूमना चाहिए।
   (ii) वह रोज पौधों को सींचता है।
   (iii) तुम गीता पढ़ों।
   (iv) मुझे कुछ याद नहीं आर रहा।
10. (i) **अर्थ** : मूर्ख
    **वाक्य में प्रयोग** : अनपढ़ लोग अक्ल के दुश्मन होते हैं, जनसंख्या बढ़ाते जाते है और गरीब बने रहते है।
    (ii) **अर्थ** : बहुत स्नेह से मिलना।
    **वाक्य में प्रयोग** : अयोध्या लौटने पर राम और भरत अंक भर कर मिले।
    (iii) **अर्थ** : कड़ी टक्कर लेना।
    **वाक्य में प्रयोग** : अबकी बार यदि चीन ने आक्रमण किया तो ईंट से ईंट बज जाएगीं।
    (iv) **अर्थ** : रीति से विपरीत कार्य करना।
    **वाक्य में प्रयोग** : वह रात भर तो पढ़ता है और दिन में सोता है, वह हमेशा उल्टी गंगा बहाता है।
    (v) **अर्थ** : तैयार होना।
    **वाक्य में प्रयोग** : यात्रा कठिन थी, पहाड़ पर चढ़ना था किन्तु कमर कसली और चल पड़े।

(vi) **अर्थ** : चौकन्ना होना।
**वाक्य में प्रयोग** : बेटे की चोरी की करतूत सुनकर माँ–बाप के कान खडे हो गए।

(vii) **अर्थ** : कोई बखेड़ा खड़ा करना।
**वाक्य में प्रयोग** : वह जेल से छूटकर आया है देखते हैं अब क्या गुल खिलाता हैं।

(viii) **अर्थ** : कुछ भी असर न होना।
**वाक्य में प्रयोग** : नरेश को अब कितना ही उपदेश दो वह सुधरने वाला नहीं, वह तो अब चिकना घड़ा हो चुका है।

**11.** (i) **अर्थ** : संघ में बड़ी शक्ति है।
**वाक्य में प्रयोग** : दोनों भाई आपस में लड़ों मत। दोनों में एक रहेगा तो परिवार की धाक जाम रहेगी। एक और एक ग्यारह होते हैं।

(ii) **अर्थ** : समय पर जो कर लिया जाए वही अपना है।
**वाक्य में प्रयोग** : जीवन का क्या ठिकाना इसलिए इस जिन्दगी में कर ले सो काम और भजले सो राम।

(iii) **अर्थ** : बुरे कार्य से जुड़ने पर बुराई मिलती ही है।
**वाक्य में प्रयोग** : बदमाशों की पैरवी करेंगें तो आपकी भी बदनामी होगी। कोयले की दलाली में तो हाथ काले होंगें ही।

(iv) **अर्थ** : अच्छी चीज और वह भी बहुतायत में।
**वाक्य में प्रयोग** : देवदीप का न केवल आई.सी.एस. में चयन हो गया बल्कि उसे अपने प्रदेश का कैडर भी मिल गया। यही तो है चुपड़ी और दो–दो।

(v) **अर्थ** : जैसा मुखिया वैसे ही अन्य साथी।
**वाक्य में प्रयोग** : जैसा इंजिनियर भ्रष्ट है वैसे ही उसके कार्यालय के अन्य कर्मचारी भी है। जस दूल्हा तस बनी बराता।

(vi) **अर्थ** : जान है तो जहान है।
**वाक्य में प्रयोग** : चोर हमारे रुपये ही ले गए, कम–से–कम हमें मारा तो नहीं। हमें तो यह संतोष है कि जान बची लाखों पाए।

(vii) **अर्थ** : शक्तिशाली की ही संपत्ति है।
**वाक्य में प्रयोग** : चुनावों में लठैत लोग छोटी जाति के लोगों को वोट नहीं डालने देते। गाँवों में तो सीधा–सा–न्याय है जिसकी लाठी उसकी भैंसे।

(viii) **अर्थ** : संदैव एक सी स्थिति।
**वाक्य में प्रयोग** : (प्रश्न) कहो कैसा चल रहा है? (उत्तर) चलना–चलाना क्या है? जैसे पहले थे वैसे ही अब हैं, वहीं ढ़ाक के तीन पात।

**12.** (i) प्रतिनिधि (ii) गणपूर्ति
(iii) मानना (iv) प्रक्रिया
(v) भार (vi) उठा देना
(vii) छोड़े गए (viii) अधिभार

## [अनुभाग-ब]

**13.** (i) बाघों की संख्या व मनावृत्ति।

(ii) केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा कठोर प्रतिबन्ध लगाने से बाघों की संख्या तेजी से बढ़ी।

(iii) प्रत्येक बाघ का अपना क्षेत्र लगभग दो वर्ग किमी होता है।

(iv) निर्धारित क्षेत्र में दूसरे क्षेत्र के बाघ के आने से बाघों में परस्पर टकराव होता है।

**14.** (i) जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।

जैसे समुद्र में पैंदे पर उतरने वालों को मूंगे–मोती मिले हैं, वैसे ही जीवन को हम जितनी गहराई में जाकर देंखेंगें उतना ही हमें लाभ होगा अतः हमें भौतिक सुखों में न फँस कर जीवन की वास्तविकता को परखना चाहिए।

(ii) होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

जो महापुरुष होते हैं, इनमें महानता के लक्षण जन्म से ही दिखाई देते हैं, क्योंकि वे जन्म से ही अपने छोटे–दोटे कार्यों से ही दूसरों के ह्रदय पर प्रभाव डालते हैं। उन कार्यों से उनमें महान् गुणों का विकास होता है मानवीय गुणों के पारखी लोंग ऐसे गुणवान् जनों को समय से पूर्व ही पहचान लेते हैं।

**15.** किसी महाविद्यालय के प्राचार्य के नाम व्याख्याता पद की नियुक्ति हेतु एक कार्यालयी पत्र लिखिए। **[स्वयं करें।]**

**अथवा**

अपने शहर की नगरपालिका के अध्यक्ष को एक पत्र लिखिए जिसमें जल की आपूर्ति नियमित करने का अनुरोध किया गया हो। **[स्वयं करें।]**

**16.** परिपत्र (आदेश के रूप में)

(राजस्थान सरकार के कार्यालायों के प्रयोग हेतु भाषा विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा निर्धारित परिपत्र का प्रारूप)

**राजस्थान सरकार**
**मंत्रिमण्डल सचिवालय**
**शासन सचिवालय**

**पत्र क्रमांकः** 08(क12)/मं.मं./82/51से 50 जयपुर, 23 मई, 2019

**परिपत्र**

**विषय :** जिला स्तर पर मंत्रिमंडल की बैठकों का आयोजन।

जिलों की समस्याओं का गहन अध्ययन कर क्षेत्रीय विकास की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए विकास व प्रशासनिक प्रक्रियाओं को अधिक गति देने हेतु राज्य सरकार ने जिला स्तर पर मंत्रिमंडल की बैठकें आयोजित करने का निर्णय लिया है। मंत्रिमण्डल की जिला स्तर बैठकों में निम्नलिखित विषयों पर विचार कर निर्णय किया जाएगा–

(क) नियमित विषय–सूची

(ख) प्रशासन द्वारा प्रेषित एवं प्रभारी मंत्री द्वारा सूचीबद्ध जिले व क्षेत्र से संबंधित समस्याओं पर विचार

(ग) कतिपय अंतरविभागीय प्रकरण, जो समन्वय के अभाव में अवशेष हैं

(घ) विकास की प्रमुख माँगें, उनका विश्लेषण एवं उन्हें कब तक क्रियान्वयन हेतु लिया जा सकता है, इस पर निर्णय।

जिलों में मंत्रिमण्डल की बैठकों में विचारणीय विषयों के बारे में आदेशानुसार लेख है कि संबंधित कलेक्टर, संबंधित शासन सचिवगण, क्षेत्रीय व जिलें से संबंधित समस्याँएं जिनका मंत्रिमंडल स्तर पर समाधान होना है, संबंधित मंत्रिगण के माध्यम से मंत्रिमण्डल सचिवालय में प्रेषित करेंगे। संबंधित जिले के प्रभारी मंत्री महोदय जिले में मंत्रिमण्डल की बैठक से पर्याप्त समय पूर्व क्षेत्र व जिले की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर सूचीबद्ध कर लेने का कष्ट करेंगे एवं तदुपरांत मुख्यमंत्री महोदय से पूर्व में विचारविमर्श कर इन समस्याओं को मंत्रि–परिषद् में विचारार्थ लिया जा सकेगा।

**ह.**

**उप शासन सचिव**

**पत्र क्रमांकः** 08(क12)/मं.मं./82/51से 50 जयपुर, 23 मई, 2019

**प्रतिलिपि** : सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु–

1. सचिव, राज्यपाल, राजस्थान, जयुपर।
2. सचिव, मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार, जयपुर
3. समस्त विशिष्ट सहायक/निजी सचिव, मंत्रिगण/राज्य मंत्रिगण/उप–मंत्रिगण।
4. समस्त शासन सचिव/विशिष्ट शासन सचिव।
5. समस्त विभागाध्यक्ष।
6. सचिवालय के समस्त विभाग, अनुभाग/प्रकोष्ठ।
7. रक्षित पत्रावली।

**ह.**

**उप शासन सचिव**

**अथवा**

कार्यालय, अधिशासी अभियंता, इंदिरा गाँधी नहर परियोजना, क्रय खंड़, बीकानेर के लिए निविदा सूचना (तालिका–युक्त प्रारूप) प्रस्तुत कीजिए। **[स्वयं करें।]**

17. देश की आजादी से लेकर सत्रह वर्षों तक पं. जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रधानमंत्री रहे। उन्होंने जैसा सोचा उसी दिशा में भारत के स्वरूप को निर्मित करने का अथक परिश्रम किया। उन्होंने यह बात स्पष्ट रूप में कही थी कि बिना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के हम प्रगति नहीं कर सकते। विज्ञान तथा उत्साह था कि उन्होंने अपने विचार दूसरों को बताने का कोई भी अवसर हाथ से जाने नहीं दिया। उनके विचार यहाँ उद्धृत हैं, आप जानते हैं जब कभी ऐसा अवसर स्वतः मिलता है, मैं विज्ञान तथा उसकी प्रशाखा प्रौद्योगिकी के महत्व के बारे में अवश्य कुछ कहता हूँ। मेरे विचार से हमें इस बात का अनुभव करना चाहिए कि आधुनिक जीवन विज्ञान और प्रौद्योगिकी का सुपरिणाम है।

## [अनुभाग-स ]

18. **निबंध :–**

(i) **आतंकवाद : समस्या और समाधान।**

आतंकवाद से सारी दुनिया झूझ रही है। आतंकवाद एक विश्व व्यापी समस्या बन गयी है और इसकी जड़े सारे संसार में फैलती जा रही हैं। दरअसल आतंकवाद प्राचीन काल से ही इस संसार में एक बड़ी समस्या के रूप में विद्यमान रहा है। इस समस्या के निदान के लिए भगवान राम का चरित्र याद आता है। भगवान राम को उनके सुख समृद्धि पूर्ण व सदाचार युक्त शासन के लिए याद किया जाता है। उन्हें भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है। जो पृथ्वी पर मनुष्य रूप में असुर राजा, आसुरी आतंकवादी रावण से युद्ध लड़ने के लिए आए। उनका राम राज्य अर्थात् राम का शासन शांति व समृद्धि की अवधि का पर्यायवाची बन गया है। भगवान राम जिस युग में जन्मे उस युग में भी आसुरी आतंकवाद फैला हुआ था। पड़ोसी देश के शक्तिशाली अधिपति रावण ने सपूर्ण भारत में अपने आसुरी आतंकी ठिकाने बना रखे थे। विभिन्न आसुरी आतकवादी सगठनों का वह प्रयोजक था। जो देश के विभिन्न भागों में आसुरी आतंकवादी गतिविधियां संचालित करते थे। कमजोर और निर्बल जनता भयभीत हो कर अपनी इच्छाओं का दमन करके रावण की आसुरी संस्कृति का अनुसरण करने लगी और कायर शासकों ने बिना विरोध के रावण की पराधीनता स्वीकार कर ली। देश की ऐसी दुर्दशा देख कर आतंकवाद के चक्रव्युह को धवस्त करने के लिए भगवान श्री राम ने अपने बल, पराक्रम तथा बुद्धि का प्रयोग करना शुरू किया तो उस समय का सम्पूर्ण आसुरी आतंकवाद श्री राम के विरुद्ध संगठित हो गया। जिसमें उस समाज के कुटिल, बुद्धिजीवी, विचारक भी आसुरी आंतकवाद की मदद कर रहे थे। समाज में हमेशा ही अच्छी और बुरी दो विचार धाराएं रहती आयी हैं। स्वाभविक है की उस काल के समाज में अच्छे बुद्धिजीवी, महात्मा, विचारक भी थे जो आतंकवाद से समाज को बचाना चाहते थे। समाज का यही विचारक, बुद्धिजीवी वर्ग जनमानस को जीवन बल देने का काम करता था। जो उस काल में ऋषि कहलाते थे। श्री राम ने इस बात को समझ लिया था कि यदि ऋषि जीवित है तो समाज जीवित रहेगा। इसलिए श्री राम ने आंतकवाद के विरुद्ध देश के ऋषियों को संगठित कर उनका मार्ग दर्शन लिया। महर्षि विश्वामित्र के मार्गदर्शन में उन्होंने आसुरी

आतंक के ठिकानों को नष्ट करना शुरू किया। मारीच भाग गया, सुबाहु और ताडका मारे गए, परन्तु यह आतंकवाद के विरुद्ध युद्ध का केवल प्रारम्भ था। इसको और अधिक गति देने के लिए सत्ता और सिहासन का लोभ त्याग कर श्री राम बनवासी बने। जनता बनकर जनता के बीच जाकर उनके सुख, दुःख को समझा और भाई भरत द्वारा राज्य का अधिकार ग्रहण करने की प्रार्थना और आग्रह को प्रेमपूर्वक अपने भाई को अपना उद्देश्य की महानता और पवित्रता समझ आयी। एक और भरत ने शासन तंत्र संभाला दूसरी ओर राम जन जन के बीच में गए बन बन भटके। बनवासी, अरण्यवासी जनता तथा ऋषियों की पीड़ा और कष्टों को समझा और आतंकवाद जनित पीड़ा देख कर उन्होंने शत्रओं के गढ़ में घुस कर आतंकवादी ठिकानों को ध्वस्त करने का संकल्प लिया, बड़े साहस की बात थी उन्होंने भुजा उठा कर प्रण लिया ''आतंकवादी असुरता को दुनिया से मिटा दूँगा।'' यह प्रण करने के साथ ही वे ऋषियों से जा जा कर मिले और उनको आश्वस्त किया लेकिन इतना ही पर्याप्त नहीं था उनकी आतंकवाद विरोधी नीति का तीसरा बिन्दु था। अच्छी विचारधाराओं वालों और आम जनता को संगठित करके एक व्यापक जन अभियान को जन्म देना। तेजस्वी, विचारक महर्षि अगस्त्य जहां एक ओर उनके इस अभियान के प्राण थे, वहीं सामान्य बनवासियों, कोल किरातों और वानरों तक का उनको सहयोग प्राप्त हो रहा था। आतंकवाद से संघर्ष यह किसी शासक का नहीं बल्कि आम जनता का नारा बन गया था। इस व्यापक जन अभियान का प्रभाव रावण के गढ में भी पड़ने लगा औश्र उसकी जनता तथा उसके भाईयों यहाँ तक की उसकी पत्नी मन्दोदरी भी रावण की आतंकवादी नीतिओं का विरोध करने लगे। जिस कारण वह श्री राम से भयभीत हो गया। इस व्यापक जन अभियान से जननायक श्री राम ने एक के बाद एक आतंकवादी ठिकानों को नष्ट करना आरम्भ कर दिया। दण्डकारण्य में अपना ठिकाना बनाये हुए खर–दूषण और त्रिशरा अपने हजारों साथियों सहित मारे गए।

आतंकवाद की इस हार से उनका शासक रावण बौखला उठा। उसने छद्मवेश बना कर सीता का अपहरण कर लिया। यह अकेले श्री राम की नहीं बल्कि देश की जनता की भावनाओं पर चोट थी। दरअसल आतंकवाद का लक्ष्य एक ही होता है– आम जनता के भाईचारे तथा अच्छे विचारों को ध्वस्त करना, और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह किसी भी सीमा तक जा सकता है। आतंकवादी देश के अधिपति को समझाने के सारे प्रयास विफल हो जाने के पश्चात अन्तिम समाधान के रूप में राम ने रावण पर आक्रमण किया। सम्भवतः यह मानव इतिहास का सबसे भीषण युद्ध था। परन्तु समाज के हित की जनभावनाओं को सफलता अवश्य मिलती है, इसलिए अन्त में आतंकवाद का खात्मा हो गया। श्री राम ने आतंकवाद को जड़ मूल से मिटा दिया। यदि हमारे देश के नागरिक, शासक और अच्छे विचारक नियमबद्ध प्रणाली, मानसिक परिपक्कवता और ईमानदारीपूर्वक अपना उद्देश्य निर्धारित कर आतंकवाद को समाप्त के बारे में भगवान श्री राम की नीतियों का पालन करने हेतु जनआन्दोलन करेंतो आतंकवाद की समस्याओं का अन्त अवश्य हो सकता है।

## (ii) राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान

**प्रस्तावना :**

स्वच्छ भारत अभियान भारत को गंदगी–रहित बनाने की एक ऐसी मुहिम और अभियान है जो राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में भारत सरकार द्वारा देश के 4041 सांविधिक नगर की आधारभूत संरचना, सड़के और पैदल मार्ग, की सफाई का लक्ष्य कर आरंभ किया गया है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आधिकारिक रूप से इसकी शुरूआत 2 अक्टूबर, 2014 गाँधी जयंती के दिन नई दिल्ली के राजघाट पर किया। इस अभियान के आरंभ के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने खुद सड़क को साफ किया। ये अभी तक का सबसे बड़ा सफाई अभियन है जिसमें 30 लाख सरकारी कर्मचरियों के साथ स्कूल कॉलेजों के बच्चों ने भी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया।

**राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान की शुरूआत :**

इस अभियन की शुरूआत के दिन प्रधानमंत्री ने कला, खेल और साहित्य से जुड़े 9 हस्तियों को नामित किया अपने अपने क्षेत्रों में इस मिशन को आगे बढ़ाने के लिएये। स्कूल कॉलेजों ने भी अपने तरीके से कई सारे कार्यक्रम आयोजित कर इसमें भाग लिया। प्रधानमंत्री मोदी ने उन नौ नामित लोगों से आग्रह किया कि वे अपनी तरफ से नौ व्यक्ति चुने जो भारत स्वच्छता अभियान में पूरी इच्छाशक्ति से भाग ले और इस तरह एक पूरी मानव श्रृंखला का निर्माण हो जिसमें देश के हर कोने से हर भारतीय शामिल हो और इसे राष्ट्र मिशन के रूप में आगे बढ़ाये।

**राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान का मकसद :**

किसी पेड़ की शाखाओं की तरह ही इस मिशन का भी मकसद भारत के हर एक व्यक्ति को जोड़ना है, चाहे वो किसी भी व्यवसाय से हो। स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे सभी परिवारों को स्वास्थ्य प्रद शौचालय प्रदान करना है, बेकार शोचालय को अल्प लागत स्वास्थ्य प्रद शौचालयों में बदलना, हैण्ड पंप उपलब्ध कराना, सुरक्षित नहाना, स्वच्छता संबंधी बाजार हो, निकास नली, ठोस और द्रव कचरे की उचित व्यवस्था हो, शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता हो, घरेलू और पर्यावरण संबंधी सफाई व्यवस्था आदि।

भारत सरकार द्वारा व्यक्तिगत स्वच्छता और पर्यावरणीय स्वच्छता को लेकर इसके पहले कई सारे जागरूकता कार्यक्रम (जैसे– पूर्ण स्वच्छता अभियान, निर्मल भारत अभियान आदि) प्रारंभ किये गए थे लेकिन इस तरह के अभियान ज्यादा प्रभावी साबित नहीं हुए। इस अभियान का मुख्य लक्ष्य खुले में शोच की प्रवृति को खत्म करना, अस्वास्थ्यकर शौचालयों को बहाने वाले शौचालयों में तब्दील करना, हाथ से शौच की सफाई न करना, ठोस और द्रव कचरे को अच्छी तरह से निपटान कर देना, साफ सफाई को लेकर लोगों को जागरूक करना, लोगों के सोच में बदलाव लाना, साफ–सफाई के सुविधाओं के प्रति प्राइवेट क्षेत्रों की भागीदारी को सुगम बनाना आदि।

**राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान में नामित सदस्य :**

इस मिशन में प्रधानमंत्री द्वारा नामित किये गए नौ सदस्य थे, सलमान खान, अनिल अंबानी, कमल हासन, कॉमेडियन कपिल शर्मा, प्रियंका चोपड़ा, बाबा रामदेव, सचिन तेंदुलकर, शशि थरूर और प्रसिद्ध टीवी धारावाहिक ''तारक मेहता का उल्टा चश्मा'' की पूरी टीम। भारतीय फिल्म अभिनेता आमिर खान को इसके शुभारंभ के मौके पर आमंत्रित किया गया था। इस अभियान के लिए प्रधानमंत्री द्वारा कई ब्रैंड एम्बेस्डर्स का भी चुनाव किया गया था जिनका स्वच्छ भारत अभियान को अलग–अलग क्षेत्रों में प्रारंभ और प्रोत्साहित करने की जिम्मेदारी थी। 8 नवम्बर, 2014 को उन्होंने कुछ और लोगों को इससे जोड़ा (मोहम्द कैफ, सुरेश रैना, अखिलेश यादव, स्वामी रामभद्रचार्य, कैलाश खेर, राजू श्रीवास्तव, मनु शर्मा, देवी प्रसाद द्विवेदी और मनोज तिवारी) और 25 दिसम्बर, 2014 को सौरव गांगुली, किरन बेदी, रामो जी राव, सोनल मानसिंह और पदमानभा आचार्या आदि को स्वच्छ भारत अभियान का हिस्सा बनाया।

उत्तर प्रदेश के सरकारी भवनों में, सफाई सुनिश्चित करने के लिए, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा चबाने वाले पान, गुटका और अन्य तम्बाकू उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

**उपसंहार :**

कई सारे दसूरे कार्यक्रम जैसे स्वच्छ भारत रन, स्वच्छ भारत ऐप्स, रियल टाईम मॉनिटरिंग सिस्टम, स्वच्द भारत लघु फिल्म, स्वच्द भारत नेपाल अभियान आदि इस मिशन के उद्देशय को सक्रियता से समर्थन करने के लिये प्रारंभ और लागू किया गया।

**स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) का लक्ष्य है–**

- ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाना।
- 2019 तक स्वच्छ भारत के लक्ष्य को पूरा करने के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में साफ सफाई के लिये लोगों को प्रेरित करना।
- जरूनी साफ सफाई की सुविधाओं को निरंतर उपलब्ध कराने के लिये पंचायती राज संस्थान, समुदाय आदि को प्रेरित करते रहना चाहिये।
- ग्रामीण क्षेत्रों में ठोस और द्रव कचरा प्रबंधन पर खासतौर से ध्यान देना तथा उन्नत पर्यावरणीय साफ सफाई व्यवस्था का विकास करना जो समुदायों द्वारा प्रबंधनीय हो।
- ग्रामीण क्षेत्रों में निरंतर साफ सफाई और पारिसिंतिक सुरक्षा को प्रोत्साहित करना।

**(iii) भारत में लोकतंत्र का भविष्य**

**भूमिका :**

26 जनवरी, 1950 को देश सही अर्थों में आजाद हो जाएगा। उसकी आजादी का क्या होगा? क्या वह अपनी आजादी बरकरार रख पाएगा या उसे खो देगा। यह पहला विचार हैद्व जो मरेर दिमाग में आता है। ऐसा नहीं है कि भारत कभी आजाद नहीं रहा, मुद्दा यह है कि पहले भी वह अपनी आजादी खो चुका है। क्या यह फिर अपनी आजादी खो देगा? यह ऐसा विचार है, जो मुझे भविष्य को लेकर चिंतित कर देता है। जो चीज मुझे सबसे ज्यादा परेशान करती है, वह यह है कि भारत न सिर्फ एक बार पहले भी अपनी आजादी खो चुका है,

बल्कि यह इसलिए हुआ कि इसके अपने ही कुछ लोगों ने गद्दारी की। जब मुहम्मद बिन कासिम की सेना ने हमला किया था, तो उसने धार के कुछ सेनापतियों को घूस दी थी। इन सेनापतियों ने बाद में धार के राजा की तरफ से लड़ने से इनकार कर दिया था।

**विशेषताए :**

एक जयचन्द था, जिसने पृथ्वीराज से लड़ने के लिए मुहम्मद गोरी को आमंत्रित किया था। जब शिवाजी आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे, तो कई राजाओं ने मुगल सम्राट का साथ दिया था। जब ब्रिटिश सिख शासकों को परास्त करने की कोशिश कर रहे थे, तब प्रमुख सेनापति गुलाब सिंह चुप बैठ गया था, उस कठिन वक्त में उसने अपने राज्य की कोई मदद नहीं की।

**बाधाएँ :**

ये विचार मुझे इसलिए भी परेशान कर रहे हैं कि जाति और तरह–तरह के विश्वासों जैसे हमारे पुराने दुश्मन तो हैं ही, साथ ही हमारे यहां तब बहुत सारे राजनीतिक दल भी होंगे, जिनका नजरिया हर मुद्दे पर एक दूसरे का विरोधी हो सकता है। क्रूा भारतीय अपने देश को इन विश्वासों और मतभेदों से ऊपर रख सकेंगे? मुझे नहीं पता, लेकिन अगर पार्टियां अपने विचार को अपने देश से ऊपर रखेंगी, तो हमारी आजादी हमेशा के लिए खतरे में पड़ जाएगी। हमें इस खतरे से देश को बचाना होगा। हमें यह प्रण लेना चाहिए कि हम अपनी आजादी की रक्षा अपने खून की अंतिम बूंद तक करेंगे।

26 जनवरी, 1950 से भारत एक लोकतांत्रिक देश होगा, इस अर्थ में कि यहां जनता की सरकार होगी, जनता के द्वारा होगी और जनता के लिए होगी। फिर वही विचार मेरे दिमाग में आता है कि क्या भारत अपने लोकतांत्रिक संविधान की रक्षा कर पाएगा? क्या वह इसे बरकरार रख पाएगा या खो देगा? यह दूसरा विचार मुझे और भी ज्यादा चिंति करता है। भारत में हपले भी लोकतंत्र जैसी व्यवस्था वाले गणराज्य रहे हैं, संसदीय व्यवस्था और संसदीय परंपराएं दिखाती रही हैं लेकिन उन लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को भारत ने खो दिया। क्या वह फिर इन्हें खो देगा?

भारत जैसे देश में खरा यह भी है कि यहां की लोकतंत्र की तानाशाही का मार्ग न प्रशस्त कर दे। किसी नए लोकतंत्र के लिए यह बहुत संभव है कि वह अपना रूप तो बरकरार रखे, लेकिन वास्तव में उसकी जगह तानशाही स्थापित हो जाए अगर किसी जगह पर भूस्खलन होता है, तो अगली बार उसी जगह पर भूस्खलन का खतरा सबसे ज्यादा होता है।

अगर हम लोकतंत्र के रूप को नहीं नहीं, इसकी अंतर्वस्तु को भी बचाना चाहते है, तो हमें क्या करना चाहिए? सबसे पहला तरीका तो मेरी समझ से यह है कि हमें सांविधानिक तरीकों का इस्तेमाल सामाजिक और आर्थिक लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए करना चाहिए। इसका अर्थ है कि हमें खूनी क्रांति को छोड़ देना चाहिए। इसका यह भी अर्थ है कि हमें सिविल नाफरमानी, असहयोग और सत्याग्रह जैसी चीजों को भी छोड़ देना चाहिए। जब सामाजिक और आर्थिक लक्ष्य हासिल करने के लिए कोई संविधानिक रास्ता न हो, तो ऐसे तरीकों को

जायज ठहराया जा सकता है। लेकिन जब संविधान का रास्ता सबके लिए खुला है, तो गैर सांविधानिक तरीकों का इस्तेमाल जायज नहीं कहा जा सकता। ये तरीके अराजकता का व्याकरण रचने के अलावा कुछ नहीं करेंगे, इनको जितनी जल्दी छोड़ दिया जाए, उतना ही अच्छा हैं।

दूसरी चीज जो मेरे दिमाग में आ रही है, वह है जॉन स्टुअर्ट मिल की चेतावनी। यह उन लोगों के लिए है, जो लोकतंत्र को बरकरार रखना चाहते हैं। वह कहते हैं कि अपनी स्वतंत्रताओं को किसी भी शखस, चाहे वह कितना भी महान् क्यों न हो, के चरणों में कभी समर्पित न करें, उस पर विश्वास करके उसे ऐसी शक्तियां कभी न दें, जो लोकतंत्र की संस्थाओं को नीच करती हों। किसी महान् व्यक्ति ने अगर देश की बड़ी सेवा की है, तो उसके प्रति शुक्रगुजार होने में कुछ भी गलत नहीं है, लेकिन इसकी भी एक हद होती है। आइरिश देशभक्त डेनियल ओकोनेल के शब्दों में कहा जाए, तो कोई व्यक्ति अपने सम्मान की कीमत पर शुक्रगुजार नहीं हो सकता, कोई महिला अपनी मर्यादा की कीमत पर शुक्रगुजार नहीं हो सकती और कोई मुल अपनी आजादी की कीमत पर शुक्रगुजार नहीं हा सकता।

दूसरे देशों के मुकाबले भारत के लिए यह ज्यादा जरूरी है। यहां राजनीति में भी जिस तरह की भक्ति दिखाई देती है, वैसी दुनिया में और कहीं नहीं दिखाई देती। धर्म के मामले में भक्ति मुक्ति की राह हो सकती है, लेकिन राजनीति में भक्ति निश्चित तौर पर तानाशाही का रास्ता ही खोलगी।

तीसरी चीज यह है कि हमें अपने राजनीतिक लोकतंत्र को सामाजिक लोकतंत्र बनाना चाहिए। अगर हमने सामाजिक लोकतंत्र का आधार नहीं तैयार किया, तो राजनीतिक लोकतंत्र ज्यादा नहीं चलेगा। सामाजिक लोकतंत्र का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है एक ऐसी जीवन शैली, जो स्वतंत्रता समता और भाईचारे के मूल्यों को मान्यता देती है। इन तीनों मूल्यों को अलग–अलग नहीं देखना होगा इन तीनों की त्रिमूर्ति है और इनमें से एक को भी अलग कर देने का अर्थ है, लोकतंत्र के मकसद को ही पीछे छोड़ देना। स्वतंत्रता को आप बराबरी से अलग नहीं कर सकते। बराबरी स्वतंत्रता से अलग नहीं की जा सकती। इसी तरह, आप स्वतंत्रता और बराबरी को भाईचारे से अलग नहीं कर सकते। अगर बराबर और स्वतंत्रता नहीं होगी, तो कुछ लोग बाकी पर शासन करने लगेंगे। अभी तक भारत एक ऐसा समाज है, जिसमें श्रेणीगत गैर बराबरी है। इसलिए ऐसे कुछ लोग हैं, जिनके पास अथाह दौलत है और दूसरी तरफ ऐसे लोग हैं, जो पूरी तरह दरिद्रता में जी रहे हैं।

**उपसंहार :**

26 जनवरी, 1950 को हम विसंगतियों से भरे जीवन में प्रवेश करेंगे। राजनीतिमें हमारे यहां समता होगी, आर्थिक जीवन में विषमता होगी राजनीति में हम एक व्यक्ति, एक वोट और हर वोट की समान अहमयित के सिद्धांत को मान्यता देंगे लेकिन हामरी जो सामाजिक और आर्थिक संरचना है, उसके चलते हम हर व्यक्ति की समान अहमियत के सिद्धांत से दूर ही रहेंगे। अगर यह लंबे समय तक चला, तो हमारा राजनीतिक लोकतंत्र खतरे में पड़ जाएगा। इसलिए जितनी जल्दी हो सके, हमें गैर बराबरी को खत्म करना होगा।

आजादी निश्चित तौर पर खुशी का करण होती है, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आजादी ने हमें बड़ी जिम्मेदारी भी सौंपी है। आजादी का अर्थ है उस मौके को खो देना, जब हर गलत चीज की जिम्मेदारी ब्रिटिश शासकों पर थोपी जा सकती थी। अगर अब कुछ गलत होता है, तो उसके लिए कोई और नहीं, हम खुद जिम्मदार होंगे। अब गलत होने का खतना बहुत बड़ा है।

**(iv) भारत में कम्प्यूटर क्रांति**

**प्रस्तावना :**

वस्तुतः मानव सभ्यता के विकास में सूचनाओं के आदान प्रदान का विशेष महत्त्व रहा है। इसके अभाव में विकास संभव नहीं था। आरंभ में लोगों को कम्प्यूटर की क्षमता पर भरोसा नहीं था, किंतु आज घर से बाहर तक सभी कामों में कम्प्यूटर इस तरह घुसपैठ कर चुका है कि इसके बिना जीवन की कल्पना करना भी असंभव है।

**कम्प्यूटर का विकास एवं संरचना**

आरंभिक काल में कम्प्यूटर इतने सक्षम नहीं थे, लेकिन इसके विकास क्रम के दूसरे चरण में जब कम्प्यूटर की आंतरिक संरचना में परिवर्तन आया, तब वह पहले से कहीं अधिक सक्षम और उपयोगी बन गया। आज कम्प्यूटरों ने कार्यालयों में काम काज को नया रूप दिया है।

फाइलें और रजिस्टर धीरे धीरे दफ्तरों से विदा होते जा रहे है। इसके अतिरिक्त ऐसे कामों के लिए जहाँ बहुत अधिक ऑकड़े जमा करने पड़ते हैं, जैसे कि रेलवे आरक्षण, जहाँ टिकट आरक्षण के साथ–साथ गाड़ियों के आने जोने से संबंधित सारी जानकारी भी तुरंत उपलब्ध करानी होती है, वहाँ कम्प्यूटर सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

**कम्प्यूटर का विस्तार :**

कम्प्यूटर में संगृहीत ऑकड़ों के आधार पर तत्काल कोई भी सूचना सुगमतापूर्वक प्राप्त की जा सकती है। इनके अतिरिक्त बाजार, शेयर बाजार, हवाई अड्डा और यहाँ तक कि घर का हिसाब किताब रखने और सारी व्यवस्था करने में यह कम्प्यूटर डाटाबेस सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

आज बाजार में ऐसे बहुत सारे सॉफ्टवेयर पैकेज मौजूद हैं, जिनकी सहायत से आम व्यक्ति कम्प्यूटर की थेड़ी बहुत जानकारी प्राप्त करनके सरलतापूर्वक सूचनाओं को संसाधित कर घंटों के काम को मिनटों में कर सकता है।

त्वरित गणना और गणना संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कम्प्यूटर का का आविष्कार हुआ। आज अंतरिक्ष यंत्र, मौसम संबंधी भविष्यवाणियों, व्यवसाय, चिकित्सा और अखबरी दुनिया में कम्प्यूटर का इस्तेमाल बहुत बढ़ गया है।

मान लीजिए, आप कम्प्यूटर में वर्णमाला अथवा संख्याओं के लिए 6 बिट्स का इस्तेमाल करें तो संख्या 3 को इस प्रकार कम्प्यूटर में प्रेषित करेंगे 000011 : यदि 5 को कम्प्यूटर में प्रेषित करना है तो 000101 प्रेषित करेंगे। आप 6 बिट्स को 64 तरीकों से इस्तेमाल कर सकते है। इन उदाहरणों से कम से कम आप इतना तो समझ ही सकते हैं कि बिट्स में अंकों का इस्तेमाल क्यों होता है। एक बात और रोचक है कि कम्प्यूटर की भाषा में 64 संकेत हैं, जबकि अंग्रेजी

भाषा में 26 वर्ण संकेत और 10 अंक संकेत है। इस प्रकार कम्प्यूटर की भाषा का आधार अंग्रेजी भाषा से अधिक विस्तृत है।

**कम्प्यूटरों के उपकरण एवं इस्तेमाल**

कम्प्यूटर के इनपुट उपकरण में की–बोर्ड अथवा कुंजी पटल पर अंग्रेजी वर्णमाला के 26 अक्षर, 10 अंकगणित की संख्याए, आवश्यक विराम चिह्न संकेत तथा गणित संबंधी कुछ संकेत होते हैं। इसी कुंजी पटल से प्रेषित जानकारी बिट्स संकेतों में परिवर्तित होकर स्मरण उपकरण में संकलित हो जाती है। इन सूचनाओं के आधार पर आंकणित उपकरण पूर्व निर्देशों के अनुसार नियंत्रण उपकरण की सहायता से विश्लेषण कर परिणाम तैयार करता है। अंतिम परिणाम कम्प्यूटर टर्मिनल अथवा मुद्रित होकर बाहर आ जाता है। यह कार्य आउटपुट उपकरण द्वारा निष्पादित होता है।

आज कम्प्यूटर का इस्तेमाल अने क्षेत्रों में हो रहा है। चाहे ऑटोमोबाइल उपयोग हो, पर्सनल डिपार्टमेंट (कार्मिक विभाग) हो, फैशन हो या चिकित्सा क्षेत्र हो, मौसम संबंधी सूचनाएँ हो अथवा चुनाव संबंधी भविष्यवाणियाँ, हर क्षेत्र में कम्प्यूटर का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है। कम्प्यूटर के प्रयोग से हर क्षेत्र में विकास की गति बड़ी है।

उदाहरण के लिए ऑटोमबोइल उद्योग में हजारों पुर्जे एक साथ एक समय पर सही क्रम में कम्प्यूटर संयोजत कर सकता है। यही काम यदि कोई मनुष्य एक साथ करे तो न जाने कितने दिन बरबाद होंगे। कार्मिक विभाग में तो वेतन और मजदूरी के हिसाब से कम्प्यूटर के इस्तेमाल से काफी सुविधा होती है।

**कम्प्यूटर क्षेत्र में तथ्य :**

डिजाइन के क्षेत्र में तो कम्प्यूटर ने क्रांति ला दी है। वायुयान, कार, पुल औश्र सड़के डिजाइन को काफी वस्तु परक बना दिया है। तकनीकी भाषा में कम्प्यूटर के इस उपयोग को सीएडी कहते है। चिकित्सा विज्ञान में कम्प्यूटर ने उपचार क्षमता और अनुसंधान को बहुत विकिसत किया है।

एक बार किसी रोगी से संबंधित सारे तथ्य कम्प्यूटर में डल दे तो रोग पहचानने में कोई दिक्कत नही होगी। हृदय के रोगी के विष्य में सूक्ष्म से सूक्ष्म सूचनाएँ कम्प्यूटर से ज्ञात की जा सकती हैं, निकी सहायत से डॉक्टरों को रोग नियंत्रण में सहयता मिलती है। यातायात नियंत्रण, विधि व्यवस्था और दूरसंचार व्यवस्था को अधिक कारगर बनाने में कम्प्यूटरों का प्रयोग हो रहा है।

**उपसंहार :**

भविष्य में कम्प्यूटर मानव विकास में अप्रतिम साधन सिद्ध होगा। मनुष्य अनुभूति, सोच, चेतना, निर्णय और रचनात्मकता में कम्प्यूटर से आगे है, किन्तु शुद्धता, गति और कार्य करने की क्षमता में कम्प्यूटर मनुष्य को पीछे छोड़ देता है। मनुष्य और कम्प्यूटर के सहयोग से वे बातें साकर की जा सकती है, जो आज अकल्पनीय लगती है।

○○○